वेदों में पर्यावरण

प्रा. नयना डी. आमोदवाला
जे. एम. शाह आर्ट्स एन्ड कॉमर्स कॉलेज, जंबुसर जि. भरूच

प्रकृति एवम प्राकृतिक संसाधनो की उपयोगिता का ज्ञान वैदिककाल में ही हो गया था। ऋषियोंने इस पर गंभीरतापूर्वक चिंतन कर जो निष्कर्म निकाले उनका सार इस प्रकार है।

"धरती हमें माँ के समान सुविधा एवम सुरक्षा देती है, अत: धरती मेरी माँ है और मै उसका पुत्र हूँ।"

-अथर्ववेद

"अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी, सूरी, चंद्रमा, औषधि एवम वनस्पति आदि सब देवता है। जो सदा हमारी सहायता कर रहे है।''

-यजुर्वेद

"इस ब्रह्मांड में प्रकृति सबसे शक्तिशाली है क्योंकि यही सुजन एवं विकास और वही हास तथा नाश करती है। अत: प्रकृति के विरूध्ध आचरण नही करना चाहिए।"

-ऋग्वेद

भारतीय संस्कृति के आधारस्तंभ के रूप में वेदो में संदेश मिलता है की " प्रत्येक मनुष्य शुध्ध हवा को ले, शुध्ध जलपान करे। शुध्ध अनाज एवं फलाहार करे शुध्ध पर्यावरण में रहते हो तब ही वेद के अनुरूप जीवनदान मिल सकता है।

अथर्ववेद में वैदिक ऋषि पृथ्वी को अपनी माता तथा स्वयं को उसका पुत्र बताया है। इसके अतिरिक्त वट, पीपल, नीम की पूजा भूमि को माता, तुलसी को देवी आदि मानते हुए भी उनकी पूजा आज भी की जाती है। इन वृक्षों का धार्मिक महत्व होने के साथ ही वैज्ञानिक महत्व भी है।" इसके अतिरिक्त पशु-पक्षीयों की पूजा व उनको देवता के रूपमें माना जाना भी हमारी इस पर्यावरण की अवधारणा को पुष्ट करते है।

अग्नि, वायु , जल सूर्य तथा पृथ्वी आदि को देवता के रूप में तथा देवी के रूप में स्वीकार किया गया है।

वेदो में तथा धार्मिक साहित्य में नदियों तथा पर्वतों का भी दैवीय शक्ति से ओत-प्रोत माना है। तथा उनको भी देवी की श्रेणी मे ही रखा है। वैसे वैदिक ऋषि अपने मन को सर्व के प्रति शुभ संकल्प रखनेवाला हो ऐसी कामना करते है। आयुर्वेद में पर्यावरण प्रदूषण का मापदण्ड तुलसी का पौधा माना गया है। लिखा है कि... " जिस धरमें बार-बार तुलसी का पौधा मर जाये वहाँ का पर्यावरण प्रदूषित होता है।"

महर्षि अग्निवेश पर्यावरण प्रदूषण का कारण इस रूप में प्रस्तुत करते है। - कि वायु समस्त तत्वों के प्रदूषण के जड़ अधर्म तथा प्रकृति और समाज के नियमों का उल्लंधन है।

भारतीय अवधारणा में पर्यावरण के सभी प्रमुख पक्षों पर वैदिककाल – पुरातनकाल से ही विचार किया जाता रहा है। तथा पर्यावरण के प्रति अपनी चेतना और जागृति को सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

वैदिक युग में प्रकृतिक वातावरण को शुध्ध बनाये रखने के लिए किए जानेवाले उपायों में से मुख्य उपाय था, हवन, यज्ञ आदि का किया जाना था, हवन करने हेतु पवित्र समिधा का प्रयोग जिसकी आहुती में दी जाती थी। तथा वेदमंत्रो के उच्चारण से वायुमन्डल पवित्र हो जाता था। इस प्रकार मंत्रो का उच्चारण करके आहुतियाँ देवताओं के लिए प्रदान की जाती थी । मंत्रोच्चार की पवित्र ध्वनि से मनुष्य के अंत:करण विकाररहित होकर निर्मल हो जाते थे । तथा जिन देवताओं के पति आहुती दी जाती थी। वह भी प्रसन्न होकर हमें व पर्यावरण दोनों को पूर्णत: सम्पन्न बनाकर कृपा प्रदान करते थे ।

वैदिक ऋषिओने प्राकृतिक तथा पर्यावरण को शुध्ध रखने पर काफी ध्यान दिया था । वेदोमें पर्यावरणकी रक्षा के लिए वायु जल और औषधियों के संरक्षण निर्देश दिया गया है ।

यजुर्वेद के सोलहवे रूद्राध्याय मे वनस्पतियों को रूद्र सा शिव का रूप माना गया है । रिद्रकी वृक्षो और वनस्पतियों के स्वामी के रूप में स्तुति की गई है । ऋग्वेद के ये मंत्र हमारी भावनाओं मे वृक्षो के प्रति श्रध्धा एवं उदार भावो की पुष्टि करते है।

अथर्ववेदमें पर्यावरण की सुरक्षा के लिए प्रार्थना है । अथर्ववेद मे पृथ्वी की वंदना करके उनका महिमागान किया है । पृथ्वी सबका आधाररूप और सर्वका पोषण करनेवाली है ।

भूमी मेरी माता है । ऐसी पृथ्वी हमारे लिए शक्तिशाली औषधियाँ उत्पन्न करे एसी कामना की गई है। अथर्ववेद के ऋषि ने आदेश के स्वर मे कहा है – हे मनुष्य । पृथ्वी पर पुष्पित वृक्षो का नाश मत करो, न छेड़ा जाए । यदि छेड़ने की जरूरत हो तो भी उनके हर तरह उत्तम तरीके से छेड़ा जाय की – जैसे एक अच्छा वैदय स्वस्थ बनाने के लिए उसके खराब अवयव का छेदन करते है ।"ऋग्वेद मे अग्नि को पिता के समान कल्याण करनेवाला कहा गया है । जलसूकट, मेधसूकट, वृष्टिसूकट और पर्जन्यसूकट मिलते है ।

पर्यावरण संतुलन की चर्चा भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम वैदिक साहित्य मे भी की गई है । वैदिक मंत्रो के माध्यम से मनुष्य को शिक्षा दी गई है की वह पशु-पक्षियों को अपने से तुच्छ न समजे और नदियाँ, पर्वतो, वृक्षो और प्रकृति के अन्य अंगोमें दैवशक्ति के दर्शन करे ।

अथर्ववेद मे पीपल के वृक्ष को 'देवसदन ' कहा गया है । पुराण में भी वृक्षो मे विष्णु का वास बताया गया है । भारत में वृक्ष पूजा की परंपरा सिन्धु धाटी की सभ्यता से ही मिलने लगते है । प्राचीन भारत में जहाँ वृक्षारोपण को लाभदायक और पुण्यकर्म बताया गया है । महाभारत मे वृक्ष की पत्तियाँ तक को तोड़ना वर्जित माना गया है । जलदेवता संबंधी सूकतों ऋग्वेद और अथर्ववेद मे प्राप्त होता है । इन सूकतों के आधारित जलदेवता की विशेषता और महिमा का वर्णन करते हुए दैवी स्वरूप के बारे में जल का विविध प्रकार होता है ।

वेदो ने भी हमें अमूल्य निधि प्रदान की है । प्राचीन ऋषिमुनिओ ने पर्यावरण संदर्भमें पर्यावरण सुरक्षा के लिए अनेक उपाय बताया है।

अंत मे ... अथर्ववेद मे भी बताया है की .. "धरती हमे सब कुछ देती है । इसी लिए धरती माता की रक्षा करना हमारा कर्तव्य बन जाता है।अगर धरतीमाता सुरक्षित रहेगी तो पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और हम भी सुरक्षित रह सकेंगे।